सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज
दिनांक 27 अगस्त 2017, (दुर्गापुर)

ज्ञान दाता ज्ञान दीजे, ज्ञान के भण्डार से।
सहज छुटकारा मिले, सबको कठिन संसार से।।

इस संसार को कठिन बताया है। ये संसार कठिन है, यहाँ कोई सुखी नही है। जितने प्रकार के मनुष्य हें इस संसार में उतने ही प्रकार के दुख हैं। तभी तो कबीर दास कहते है–

तन धर सुखिया कोई ना देखा।
जो देखा सो दुखिया देखा।।
गुरू नानक देव कहते हैं–
नानक दुखिया सब संसार।

इस संसार को कठिन कहा गया है, और इस संसार को पार करना भी कठिन है। संसार को पार करने का मतलब क्या हुआ? संसार को पार करने का मतलब हुआ, संसार से छुटकारा पाना। इस संसार से छुटकारा केवल वही पा सकता है, जिसको गुरू मिला। हम इस संसार से छुटकारा क्यों पाना चाहते हैं? क्योंकि इस संसार में कोई सुखी नही है। आप दूसरे इंसान को देखोगे, ये तो बहुत सुखी है। इसके पास गाड़ी है, बंगला है, कार है। लेकिन जब आप उसकी गहराई में जाओगे, तो आप कहोगे इससे सुखी तो मैं ही हूँ। कठिनाईयों से भरा पड़ा है ये संसार। जितने मनुष्य हैं इस संसार में, उतने ही प्रकार के दुख हैं। हरेक मनुष्य का अपना अपना दुख है। अगर ये बात होती, चलो जी सिर्फ यही एक संसार है। यहीं रहना है, यहीं खाना है, यहीं मरना है और यहीं जीना है। फिर तो हमारी मजबूरी होती यहीं इसी संसार में रहना है। लेकिन नहीं! ऐसी बात नही है। इस संसार से अलग एक जगह और है। जहाँ सुख ही सुख है, शांति ही शांति है, परम आनंद है। उस जगह का पता सिर्फ गुरू जानता है। इस दुनिया में चाहे कितना भी बड़ा साईंटिस्ट हो, उस जगह का पता उसको भी नही मालूम। इसलिए कबीर जी कहते हैं–

सतगुरू खोजो रे भाई, जगत में दुर्लभ रतन यही है।

अगर इस संसार में कोई दुर्लभ चीज है, तो वो है एक सच्चा गुरू। सच्चा गुरू कभी चेले नही बनाता, वो चाहता है सब मेरे जैसे हो जाएँ। यही एक सच्चे गुरू की पहचान है। गुरू हमको ज्ञान देता है, क्योंकि गुरू ज्ञान का भण्ड़ार है। गुरू के पास इस संसार से मुक्ति का ज्ञान है। इस जन्म मरण के चक्कर से छुटकारा कैसे पाओगे? इस संसार में जीना है, मरना है। जीकर भी हम क्या करते हैं? सिर्फ पापड़ बेलते हैं। मनुष्य औा पशु में कोई अंतर नही है। पशु खाता है, पीता है, बच्चे बनाता है और फिर राम नाम सत्य। मनुष्य भी तो यही करता है, खाता है पीता है, शादी करता है, बच्चे बनाता है, ज्यादा से ज्यादा अच्छी नौकरी मिल गई, अच्छा मकान बना लिया, लेकिन फिर अंत में राम नाम सत्य। तो फिर मनुष्य और पशु में क्या अंतर रहा? सिर्फ एक ही अंतर है मनुष्य और पशु में। मनुष्य के पास बुद्धि है, जो पशु के पास नही। बुद्धि किसलिए दी है भगवान ने? बुद्धि इसलिए नही दी कि हम इंजीनियर बने, डॉक्टर बने, ये सब भाग्य से होता है। बुद्धि हमको दी है भगवान ने सिर्फ ये सोचने के लिए कि हमारे लिए अच्छा क्या है और बुरा क्या है। कबीर साहब कहते हैं 'भजन बिन बाबरे, तेने हीरा सा जन्म गंवाया'। हम 84 लाख योनियाँ पार करके आए हैं। कभी पशु बने, कभी पक्षी बने और अंत में पहुँच गए मनुष्य योनि में। ये मनुष्य जन्म बहुत दुर्लभ है। ये एक Golden Opportuinity है। बहुत कष्ट सहकर ये मनुष्य जन्म हमको मिला है। कभी मेंढक बने तो साँप हमको खा गया। कभी छोटी मछली बने तो बड़ी मछली हमको खा गई। कभी कीड़ा बने तो किसी के पैरों के नीचे आकर मर गए। इतने कष्ट सहकर आखिर में मनुष्य जन्म मिल गया। तो इस मनुष्य जन्म को गंवाओ मत। इसका पूरा पूरा फायदा उठाओ। इसका फायदा उठाने का मतलब है हमको अपना मनुष्य जन्म सुधारना है। हम 84 लाख योनियाँ पार करके आए हैं। अब हमारे पास व्वजपवद है। 1. मनुष्य जन्म में ही रहें। 2. वापिस 84 लाख योनियों में जाएँ। 3. संसार से मोक्ष। इन्ही तीन Option के लिए भगवान ने हमको बुद्धि, विवेक दिया है। अब अगर आप गलत काम करोगे, तो वापिस 84 में जाओगे। अगर आप अच्छे काम करोगे, तो मनुष्य जन्म मिलेगा। अगर आपको मोक्ष चाहिए तो एक गुरू ढूंढना पडेगा। क्योंकि मोक्ष का रास्ता कठिन है, और ये रास्ता सिर्फ गुरू ही जानता है। गुरू आपको ज्ञान से मोक्ष का रास्ता बताता है। ज्ञान मिलता है सत्संग में। अब आपके मन में होगा, ज्ञान क्या है? ज्ञान कोई बड़ी–बड़ी पोथियाँ पढ़ना नही है। रामायण पढो, महाभारत पढो, ये ज्ञान नही है। ज्ञान सिर्फ छोटी सी बात है, इस संसार में सच क्या है और झूठ क्या है? बस! यही ज्ञान है। जिसको इस संसार में सच और झूठ का पता लग गया, वो ज्ञानी बन गया और उसी को मोक्ष मिल जाता है। इस संसार में सच क्या है और झूठ क्या है? ये जानना भी

बहुत कठिन है। हरेक विश्वास नही कर सकता है, झूठ क्या है संसार में। इन दो आँखों से जो कुछ भी हम देखते हैं संसार में, सब झूठ है। सच क्या है? सच हम इन दो आँखों से नहीं देख सकते। सच को देखने के लिए हमको तीसरी आँख चाहिए। तीसरी आँख से हम जो देखते हैं वही सच है। सच क्या है? सच एक परमात्मा है। जो चीज एक दिन हमारा साथ छोड़ देती है, वो झूठ है। जो चीज हमारा साथ कभी नही छोड़ती है, वो सच है। जब मैं 4 साल का था, तो मेरी माँ मुझे छोड़कर चली गई। अब मैं क्या समझूँ, माँ क्या होती है? मैंने माँ को देखा ही नही तो मेरे लिए माँ झूठ है। मेरी बीबी थी, मैं उससे बहुत प्रेम करता था। एक दिन वो भी मेरा साथ छोड़कर चली गई। जो चीज हमारा साथ छोड़ देती है, वो झूठ है। और जो चीज हमारा साथ नही छोड़ती है, वो सच है। कौन हमारा साथ नही छोड़ता है? एक परमात्मा ही है जो हमारा साथ नही छोड़ता है। हम पहचान नही पाते हैं उसको। वो हमारे साथ है हमेशा। हम उसको पहचान नही पाते हैं। इसलिए हम कष्ट में हैं, दुखी हैं। देखो अगर कोई आदमी कहता है कि मैंने भगवान को देखा है, तो वो महाझूठा है। क्योंकि भगवान कोई देखने की चीज नही है, वो महसूस करने की चीज है। उसको महसूस करो। रोज हम आरती में पढ़ते हैं 'नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे'। उस मालिक का कोई रूप नही है। लेकिन सब जगह है वो और हमेशा हमारे साथ है वो। अगर तुम रास्ते में जा रहे हो, कोई गाड़ी साईड़ से टकराकर निकल जाती है और आप गिर जाते हो, लेकिन ज्यादा चोट नही लगती, तो महसूस करो, मैं बच गया। उस मालिक ने मुझको बचाया। वो मेरे साथ है हमेशा। मेरी रखभाल करता है। महसूस करो उस मालिक को। फूल हैं रंग बिरंगे। ये किसने बनाए? मालिक ने बनाए। महसूस करो उसको। जब हमको दुख आता है, तो ये मत समझना कि मालिक ने हमको दुख दे दिया। हमारे दुख सुख में मालिक को कोई लेना देना नही है। हमारे सुख और दुख हमारे ही अच्छे और बुरे कर्मों की देन है। जैसा हम बीज बोते हैं, वैसी ही हम फसल काटते हैं। जब महाभारत का युद्ध खत्म हो गया तो धृतराष्ट्र ने कृष्ण से पूछा, मैं अंधा क्यों हूँ? तब कृष्ण ने कहा–मैं तुम्हारी तीसरी आँख खोल देता हूँ, तुम खुद ही देख लो। वो 105 जन्म पीछे देखते है कि वो एक कीड़े की दोनों आँखें फोड़ रहा है। हम जितने भी कर्म करते हैं, वो एक लाईन में लग जाते हैं। और First come first, हमारे ना जाने कितने लाखो जन्म हो गए। ना जाने कितने कर्म कर बैठे? और उन कर्मों को भुगतते रहते हैं। एक जन्म में कर्म पूरे नही हुए तो अगला जन्म मिलता है। अगले में कर्म पूरे नही हुए तो तीसरा जन्म मिलता है। इस तरह हम अनगिनत जन्मों में कर्मों को भुगतते रहते हैं। तो ये ज्ञान आपको कहाँ से मिलेगा? ज्ञान के भण्ड़ार से। वो ज्ञान का भण्डार है सत्गुरू। सत्गुरू कहता है–ज्ञान सिर्फ एक ही बात है इस संसार में सच क्या है और झूठ क्या है? झूठ वो चीज है जो एक दिन हमारा साथ छोड़ देता है और सच वो है जो हमारा साथ कभी नही छोडता है। जिसको ये बात समझ में आ गई, वो ज्ञानी बन गया, और उसका मोक्ष है। लेकिन ये बात समझना बहुत कठिन है। हर कोई नही समझ सकता है। लेकिन जिसको ये बात समझ आ गई, फिर वो हंस बन जाता है। आप हंस के सामने दूध में पानी मिलाकर रखो। हंस दूध–दूध को पी जाएगा और पानी को छोड़ देगा। तो हम भी हंस बन जाते हैं। झूठ–झूठ को छोड़ देते हैं और सच को पकड़ लेते हैं। झूठ का मतलब संसार को छोड देते हैं और सच का मतलब मालिक को पकड़ लेते हैं। और जब हमने झूठ को छोड दिया और सच को पकड लिया तो हम संत बन गए और मोक्ष मिल गया।

राधास्वामी।